उत्तररामचरित
नाट्यकार भवभूति

PMKVY
PRADHAN MANTRI KAUSHAL VIKAS YOJANA

पितामह - भट्टगोपाल, पिता - नीलकण्ठ
माता - जतुकर्णी, उपाधि - श्रीकण्ठ
श्रीकण्ठपदलाञ्छनः (पदवाक्यप्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम जतुकर्णीपुत्र
जन्मस्थान - विदर्भ प्रदेश के पद्मपुर
गोत्र - काश्यप गोत्र के तैत्तिरीय शाखाध्यायी ब्राह्मण

कृतियाँ - 3 रूपकों का निर्माण
1. मालतीमाधव (श्रृंगाररस का प्रकरण 10 अंक
2. महावीरचरित (वीररस, रामायणकथाश्रित 7 अंक
3. उत्तररामचरित (करुण रस का नाटक 7 अंक

भवभूति का काल - 680 - 750 ई. के मध्य
उपाधि - पदवाक्यप्रमाणज्ञ

उत्तररामचरित

प्रथम अङ्क - चित्रदर्शन

→ राम की बहन शान्ता जिसे रोमपाद ने गोद लिया था, उन्होंने शान्ता का विवाह विभाण्डक के पुत्र ऋष्यश्रृंग से कर दिया इस प्रकार ऋष्यश्रृंग दशरथ के जामाता हुए।

Scanned with OKEN Scanner

⇒ प्रथम अङ्क में राम की माताएँ, गुरुजन इत्यादि ऋष्यशृंग द्वारा आयोजित द्वादश वार्षिक सत्र में भाग लेने के लिए गये हुए थे।

⇒ वसिष्ठ आदि का सन्देश लेकर अष्टावक्र प्रवेश करते हैं।

⇒ लक्ष्मण अर्जुन नामक चित्रकार द्वारा बनाये गए भित्तिचित्र को सीता को दिखाते हैं।

⇒ राम का गुप्तचर दुर्मुख जो सीता से बेधी लोकापवाद को सुनाता है।

द्वितीय अङ्क (पञ्चवटी प्रवेश)

⇒ वनदेवता वासन्ती पथिक वेशभूषा में प्रकट होती है।

⇒ आत्रेयी नामक तापसी जो वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश के साथ रहती है उससे यह ज्ञात होता है राम ने अश्वमेध यज्ञ का शुभारम्भ किया है

जिसमें सीता की सुवर्ण निर्मित प्रतिमा को सहधर्मचारिणी के रूप में स्वीकार किया है।

PMKVY
PRADHAN MANTRI KAUSHAL VIKAS YOJANA

→ अश्वमेधीय अश्व का संरक्षण लक्ष्मण पुत्र चन्द्रकेतु कर रहे हैं (माता- ~~भुतकीर्ति~~ उर्मिला)

→ राम शम्बूक नामक शूद्र तपस्वी के वध के लिए दण्डकारण्य में प्रवेश करते हैं।

→

तृतीय अङ्क (छायाङ्क)

→ प्रारम्भ में मुरला एवं तमसा नामक दो नदियाँ प्रवेश करती हैं।

→ मुरला को महर्षि अगस्त्य एवं उनकी पत्नी लोपामुद्रा ने एक आवश्यक सन्देश देने के लिए गोदावरी के पास भेजा है।

→ तमसा सीतानिर्वासन के बाद की वस्तुस्थिति का ज्ञान कराती है।

→ तमसा सीताजी के साथ सहचरी के रूप में आती है।

→ सीता छाया के रूप में आती है।

Scanned with OKEN Scanner

⇒ तमसा सभी रसों में करुण रस की प्रधानता बतलाती है।

एकोरसः करुण एव निमित्तभेदात् भिन्नः

चतुर्थ अङ्क
(कौशल्याजनक वियोग)

⇒ सौधातकि एवं दाण्डायन वाल्मीकि के दो शिष्य होते हैं।

पंचम अङ्क
(कुमार विक्रम)

⇒ लव व चन्द्रकेतु के मध्य युद्ध का वर्णन

⇒ लव द्वारा जृम्भकास्त्र का प्रयोग

⇒ चन्द्रकेतु के सारथि सुमन्त्र को जृम्भकास्त्र के प्रयोग पर आश्चर्य होता है।

षष्ठ अङ्क
(कुमार प्रत्याभिज्ञान)

⇒ विमान के द्वारा विद्याधर एवं विद्याधरी प्रवेश करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

लव व चन्द्रकेतु का अद्भुत पराक्रम का आँखों देखा हाल सुनाते हैं।

PMKVY

→ राम के द्वारा दोनों के मध्य युद्ध का विराम की घोषणा।

सप्तम अङ्क (सम्मेलनम्)

→ गर्भ नाटक की प्रस्तुतिकरण